चिन्तन अनुचिन्तन

डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

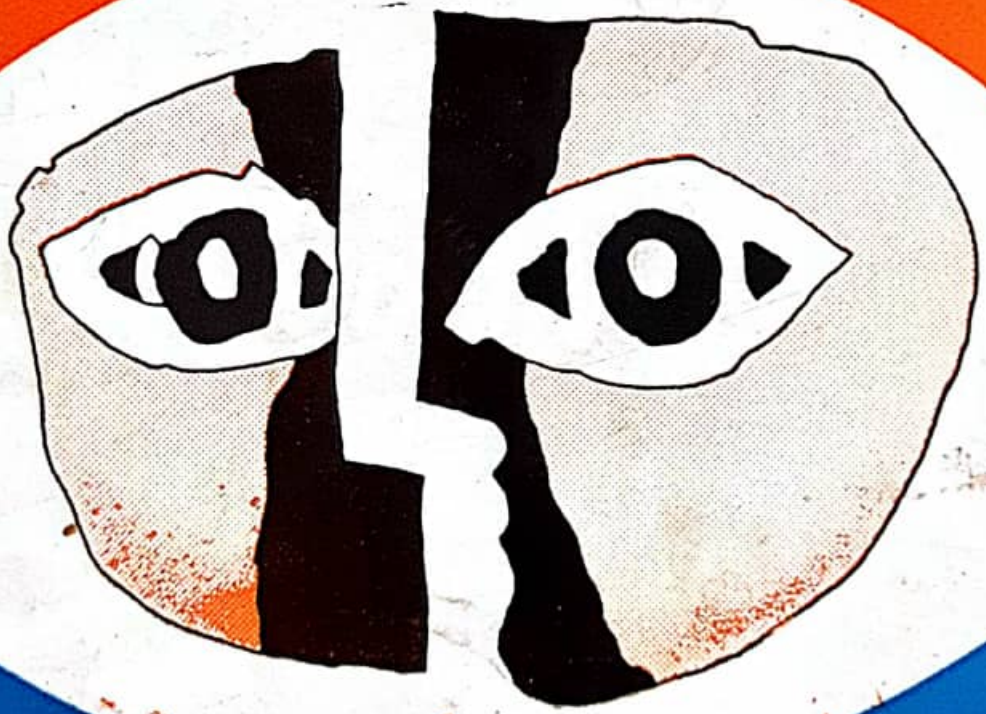

कला, साहित्य, संस्कृति जीवन और समाज के अनिवार्य तथा अविभाज्य अंग हैं चिंतन-अनुचिंतनके अधिकांश निबंध इन्हीं से संबंधित हैं जिनमें डॉ बरसैंया ने अपने शोधपरक दृष्टिकोण का प्रतिपादन यथासंभव प्रामाणिक संदर्भों के साथ किया है। मात्र पिष्टपेषण लेखकीय उद्देश्य नहीं रहा। अनेक निबंध लीक से हटकर हैं और नवीन तथ्यों का उद्घाटन करते हैं जिनकी ओर सामान्यतः विद्वानों का ध्यान बहुत कम गया है। ऐसे निबंध पूर्व स्थापित अवधारणाओं पर पुनर्विचार की आवश्यकता भी प्रतिपादित करते हैं। इस दृष्टि से उनमें पर्याप्त मौलिकता है। उदाहरणार्थ—यह अपने आप में एक विचारणीय गंभीर प्रश्न है कि किन कारणों से प्रायः सभी सवर्ण संत सगुण मार्ग से जुड़े और प्रायः सभी दलित संत निर्गुण मार्ग से? सवर्णों की अवमानना और विदेशी शासकों की यातना सहकर भी दलित संतों ने वैष्णवी भक्तिमार्ग का परित्याग क्यों नहीं किया? इसी प्रकार सूरदास के प्रगतिशील दृष्टिकोण को पर्याप्त महत्व क्यों नहीं मिला? काव्य-कृतियों में निहित इतिहास-तथ्यों की उपेक्षा क्यों की गई? यह और इसी प्रकार की अनेक बातें हैं जिन पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

चिंतन-अनुचिंतन के अधिकांश निबंधों में इसी प्रकार के अछूते बिन्दुओं को विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

चिंतन-अनुचिंतन के निबंधों में डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया की विषय की व्यापकता, प्रतिपादन की अभिनवता, तथ्यों का प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण, विवेचन-विश्लेषण की गहनता एवं स्पष्टता तथा शोधपरक दृष्टि भाषा-शैली की उत्कृष्टता के साथ सर्वत्र परिलक्षित होती है।

मूल्य : 180.00 रुपये

ISBN 81-86480-51-X

चिन्तन अनुचिन्तन

डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया
पूर्व प्राचार्य
शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय
महाराजपुर, छत्तरपुर
(मध्य प्रदेश)

सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049

ISBN 81-86480-51-X

© डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया
प्रथम संस्करण : 1999

प्रकाशक
सार्थक प्रकाशन
100 ए, गौतम नगर
नई दिल्ली - 110 049
दूरभाष : 656 73 17

लेजर-टाइपसैटिंग
माँ प्रभु मीडिया प्रा0 लि0
4393/4, अंसारी रोड, दरियागंज
दिल्ली - 110 002.
दूरभाष : 327 10 35

आवरण
चेतन दास

मुद्रक
बालाजी ऑफसैट
एम-28, नवीन शाहदरा
दिल्ली - 110 052.

मूल्य : एक सौ अस्सी रुपये

CHINTAN-ANUCHINTAN
(A collection of Literary essays)
by Dr. Ganga Prasad Gupta Barsaiya

PRICE Rs. 180.00

भूमिका

सृजन और चिन्तन सप्राण समाज के प्रमुख लक्षण हैं। दोनों अनवरत गतिशील रहते हैं। अवरोधों के बावजूद वहाँ ठहराव नहीं है। चिन्तन जानने-समझने-परखने की एक प्रक्रिया है, जिस पर हम परीक्षण और मूल्यांकन करते हैं। चिन्तन एक दृष्टि भी है जिसके सहारे हम निष्कर्ष तक पहुँचते हैं। किसी वस्तु को परखने के दो उपाय हैं—एक, यांत्रिक साधन, जिसके आधार पर हम तत्त्वों का विश्लेषण कर तथ्यों की जानकारी विवरणों के साथ प्रस्तुत करते हैं और दूसरा—चेतनापरक परीक्षण, जिसमें तथ्यात्मक विवरणों के साथ अपनी निजी प्रतिक्रिया भी निहित होती है। यंत्र निष्प्राण और चेतना सप्राण होती है। चेतना व्यक्ति की वह आंतरिक शक्ति है जिसमें बुद्धि, हृदय और मन सम्मिलित होते हैं। इन्हीं सबके प्रभाव से मूल्यांकन की ऐसी संवेदनात्मक दृष्टि तैयार होती है जो सर्जना की कसौटी का कार्य करती है। यंत्र का निष्कर्ष सदा एक ही रहता है जबकि चेतना-संपन्न दृष्टि का निष्कर्ष स्थान, पात्र, काल और परिवेश के साथ बदल भी सकता है।

सृजन की सजीव दृष्टि रुचि, स्वभाव, प्रभाव और परिस्थिति के अनुरूप वस्तु को विभिन्न कोणों से देखती, परखती और व्यक्त करती चलती है। यह अविराम गतिशील है। इसी के माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। हर व्यक्ति की दृष्टि का अपना-अपना वैशिष्ट्य है। इसका प्रमाण यह है कि सहस्राब्दियों से तमाम प्राचीन पौराणिक पात्रों, कथाओं, घटनाओं, सर्जनाओं को समय-समय पर कलाकारों, सर्जकों, विश्लेषकों ने अपने-अपने फलक पर अपने ढंग से चित्रित और विवेचित किया है। सभी में पर्याप्त भिन्नता है। यह भिन्नता कलाकार और विवेचक की चेतना-दृष्टि की भिन्नता है। यह भिन्नता कला-सर्जना के मूल्यांकन में भी दिखाई पड़ती है। साहित्य इसी दृष्टि और चिन्तन का परिणाम है जिसमें व्यक्ति, समय और समाज समाहित रहते हैं।

युग-प्रवाह के साथ समय-समय पर विद्वानों ने विविध विषयों को लेकर अपने विचार और निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। मूल्यांकन की एक परंपरा निरन्तर चलती रही है। चिन्तन, फिर चिन्तन और फिर चिन्तन पर चिन्तन। यह स्वभाव और क्रम है। चिन्तन-अनुचिन्तन का यह क्रम जीवन्तता का परिचायक है। इसमें कहीं पूर्ण विराम नहीं होता। सही-गलत की भावना भी नहीं होती। भावना होती है निजी दृष्टिकोण के प्रस्तुतीकरण की।

कला, साहित्य, संस्कृति जीवन और समाज के अनिवार्य तथा अविभाज्य अंग हैं। संग्रह के अधिकांश निबंध इन्हीं से संबंधित हैं जिनमें मैंने अपने शोधपरक दृष्टिकोण का प्रतिपादन यथासंभव प्रामाणिक संदर्भों के साथ किया है। मात्र पिष्टपेषण मेरा उद्देश्य नहीं

रहा। कई निबंध लीक से हटकर हैं और नवीन तथ्यों का उद्‌घाटन करते हैं जिनकी ओर सामान्यतः विद्वानों का ध्यान बहुत कम गया है। ऐसे निबंध पूर्व स्थापित अवधारणाओं पर पुनर्विचार की आवश्यकता भी प्रतिपादित करते हैं। इस दृष्टि से उनमें पर्याप्त मौलिकता है। उदाहरणार्थ—यह अपने आप में एक विचारणीय गंभीर प्रश्न है कि किन कारणों से प्रायः सभी सवर्ण संत सगुण मार्ग से जुड़े और प्रायः सभी दलित संत निर्गुण मार्ग से? सवर्णों की अवमानना और विदेशी शासकों की यातना सहकर भी दलित संतों ने वैष्णवी भक्तिमार्ग का परित्याग क्यों नहीं किया? इसी प्रकार सूरदास के प्रगतिशील दृष्टिकोण को पर्याप्त महत्व क्यों नहीं मिला? काव्य-कृतियों में निहित इतिहास-तथ्यों की उपेक्षा क्यों की गई? यह और इसी प्रकार की अनेक बातें हैं जिन पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

चिंतन-अनुचिंतन के अधिकांश निबंधों में इसी प्रकार के अछूते बिन्दुओं को विवेचित करने का प्रयास किया गया है। सर्वथा नवीनता और मौलिकता का दावा दंभ कहा जा सकता है। पर अपनी दृष्टि से मैंने जो जाना-समझा और अनुभव किया, उसे समय-समय पर व्यक्त करता रहा हूँ। आवश्यक नहीं कि सभी मुझसे सहमत हैं। साहित्य में सकारात्मक असहमति नये सोच और सृजन का मार्ग प्रशस्त करती है। आग्रही असहमति घातक होती है। मैंने सहमति-असहमति की परवाह किये बिना संबंधित विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। यथाशक्ति चेष्टा की है कि वे साधक और सार्थक हों। आशा है इनसे सुधीजनों को संतुष्टि मिलेगी।

चिंतन-अनुचिंतनके अधिकांश निबंध सातवें दशक में लिखे गये थे। कुछ बाद के लिखे निबंध भी हैं। हो सकता है कि आज के संदर्भ में कतिपय निष्कर्ष संगत न लगें, परंतु जब ये विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे तब पर्याप्त चर्चित हुए थे। कुछ निबंध ग्रंथों में भी यत्र-तत्र विद्वानों द्वारा संकलित किये गये हैं। उन सबको एक साथ पुस्तक-रूप में साहित्य-जगत को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मेरे साहित्यिक मित्र श्री सत्यनारायण गोबरेले एवं सार्थक प्रकाशन, दिल्ली के बंधुवर डॉ. कृष्णदेव शर्मा यदि पहल न करते तो शायद यह सुयोग अभी न मिलता। वे दोनों धन्यवाद के पात्र हैं।

– गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया

12 – एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी,
छत्तरपुर (म. प्र.)–471 001

अनुक्रम

साहित्य और कलाओं के अन्तर्सम्बन्ध	09
लोक संस्कृति में देश और काल की अवधारणा	13
सांस्कृतिक एकता और हिन्दी साहित्य	19
राष्ट्र भाषा हिन्दी और हमारा दायित्व	25
हिन्दी-दिवस और हिन्दी-जगत	30
निम्नवर्गीय संत और निर्गुणमार्ग	35
कबीर की समन्वय-दृष्टि	39
कबीर की सांस्कृतिक चेतना : विसंगतियों के प्रश्न-चिह्न	50
सूरदास की सामाजिकता और प्रगतिशीलता	53
सूरदास अंधे नहीं थे	59
तुलसी की काव्य-दृष्टि	66
केशव की कविता में इतिहास-तत्त्व	71
केशव के राम	81
पराक्रमी छत्रसाल के काव्य में आस्था और नीति	87
निराला का काव्य-संसार	96
श्रृंगार का एक पद : विकास की तीन शताब्दियां	106
बुन्देलखंड का श्रृंगारकाव्य	110
लोक कवि ईसुरी और उनकी फागें	117
ईसुरी की फागों में कहावतें और मुहावरे	125
बुन्देली फागों में भाव-वैविध्य	129
बसंत का अट्टहास होली	134
चैतनदास कृत रस विलास के कूट छंद	138
हिन्दी की पहली मौलिक कहानी	141
काव्य-परंपरा की आठ पीढ़ियाँ	147
संक्रमणकाल का साहित्यकार	152
नयी पुरानी का संघर्ष : दृष्टिकोण का अंतर	157
नये कवियों के सूरज-धूप	162
छतरपुर के प्राचीन कवि और उनका काव्य	168

डा. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म : 6 फरवरी, 1937

शिक्षा : एम. ए पी-एच. डी.

कृतियाँ : हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध प्रबंध), छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, आधुनिक काव्य-संदर्भ और प्रकृति, हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, बुन्देली . एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, मानस मनीषा आदि उच्चकोटि की 20 पुस्तकें।

लगभग 200 शोध-परक निबंधों का [illegible] की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।

12 शोध छात्रों में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त।

अब तक 20 लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत।

नव-ज्योति 'संज्ञा' व 'बन्धु' पत्रिकाओं का सम्पादन।

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, जीवाजी विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों परिषदों के अध्यक्ष रूप मे कार्य। अनेक विश्वविद्यालयों के पंजीकृत शोध-निर्देशक (परीक्षक आदि)

सम्मान : साहित्य सम्मेलनों, नगरपालिकाओ, हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि द्वारा साहित्य श्री, तुलसी पुरस्कार, विद्रोही पुरस्कार, साहित्य भारती आदि पुरस्कारों से अलंकृत।

सार्थक प्रकाशन
100ह गौतम नगर, नई दिल्ली-110 049